अध्याय : 6

समापन

रामदरश मिश्रजी का समकालीन हिन्दी कवियों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे हिन्दी साहित्य-जगत् में ऐसे चिर-परिचित एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी बहुआयामी प्रतिभा का परिचय उपन्यास, कहानी, कविता, आलोचना एवं निबंध की विधा में दिया है। इन सभी क्षेत्रों में वे चर्चा का खास विषय समय-समय पर बने हैं। लेकिन मिश्रजी की मूल चेतना कवि की है और उनके कवि का व्यक्तित्व ही शीर्ष पर है, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है। मिश्रजी मूलतः प्रगतिशील कवि हैं। मिश्र छायावाद की अतिशय काल्पनिकता और वायवीयता से मुक्त होकर निरंतर जन-सामान्य की समस्याओं से जुड़ते गये हैं। उनकी इसी विचारधारा ने उन्हें प्रगतिशील कवियों की पंक्ति में बिठाया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में मुख्य रूप से मिश्र की सृजनात्मकता के लिए प्रेरक तत्वों तथा काव्य में अभिव्यक्त विचारों को लक्ष्य बनाकर अपनी बात कही गई है। सुविधानुसार इसे छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में मिश्रजी के जन्म, जन्मस्थान, पारिवारिक परिचय, जीवन की अन्य उपलब्धियाँ, व्यक्तित्व के विविध पहलू तथा उनके सम्यक कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है।

एक मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे रामदरशजी का बचपन अभावों में बीता। उनके पिताजी के अकर्मठ, सैलानी और दब्बू स्वभाव के कारण उनका परिवार और अभावग्रस्त होता गया। उनकी कर्मठ और परिश्रमी माता ने गृहस्थी को संभाला

था। लेकिन उनके परिवार को गरीबी के अभिशाप से मुक्त किया उनके बड़े भाई रामअवधजी ने। रामदरशजी को भी उनसे (रामअवधजी से) असीम प्यार मिला, उसी प्यार ने उन्हें उच्च शिक्षा दिलाई और जीवन के उच्चतम लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मिश्रजी प्रारंभ में गाँव के स्कूल में पढ़ते थे अर्थात उनका बचपन गाँव में ही बीता। उनका गाँव क्या था राप्ती और गोरा नदी के विस्तृत कछार पर बसा हुआ छोटासा गाँव। उनका गाँव सब तरह से पीछड़ा हुआ था। किंतु यह अभावग्रस्त कछारांचल मिश्रजी के लिए वरदान सिद्ध हुआ। मिश्रजी ने अपनी भावुकता से उत्पन्न साहित्य-अंकुर को सीधे अभावमय जीवन से ही सींचना शुरू किया। उनके साहित्य-सृजन में परिवेश का अधिक योगदान रहा है। साथ ही उनके घर की अभावमय स्थिति का भी महत्त्व कम नहीं है। भले ही पारिवारिक अभाव कष्टप्रद रहे हों किंतु उन अभावों ने जो मौलिक मानवीय अनुभव दिया वह सम्पन्नता से शायद ही मिल पाता। उन अभावों ने अपने मार्फत अपने परिवेश और अपने देश के तमाम अभावग्रस्त लोगों की वेदना, अभिशाप और यातना से मिश्रजी और उनके साहित्य को जोड़ा।

मिश्रजी का आरंभिक जीवनकाल अभावग्रस्त रहा। लेकिन उनका व्यक्तित्व अभाव की तप्त भट्टी में तपकर खरे सोने की तरह निखर आया है। ऊँचा कद, गौर वर्ण, तेजस्वी चेहरा आदि चीजें तो उन्हें मिल्कीयत के रूप में मिली हैं ही, जिनसे बाह्य व्यक्तित्व आकर्षक बन गया है। साथ ही रहन-सहन में सादगी, विनोदी-प्रकृति, नीयत और अनुभूति के विपरीत कोई काम न करने की वृत्ति, भावुकता सरल और संवेदनशील स्वभाव आदि आंतरीक स्वभाव-विशेषताओं ने उनके सम्यक व्यक्तित्व में चार चाँद लगा दिये हैं। संक्षेप में मिश्रजी का बाह्य जीवन जितना सीधा-सादा एवं भोला-भाला है, उतना ही उनका मन निर्मल एवं पवित्र है। अपने सरल-विनोदी स्वभाव और सुरूचिपूर्ण अध्यापन के कारण विद्यार्थियों में प्रिय रहनेवाले मिश्रजी अपने जीवन में पूर्ण सफल रहें हैं, याने वे जो कुछ करना चाहते थे कर सके हैं।

मिश्रजी की काव्य-यात्रा प्रारंभ में एक गीतकार के रूप में रही, फिर गीतकार और कवि के आपसी संघर्ष के रूप में और अब एक विजित कवि के रूप में। उनके पूरे काव्य में उनकी चिंता का केंद्र सामान्य मानव ही रहा है। आपका पूरा काव्य यथार्थ के धरातल पर खड़ा है। आपके पूरे काव्य में स्थान-स्थान पर ग्रामीण-परिवेश के प्रति आपकी आंतरिक ममता और आकर्षण स्पष्ट झलकता है। "पथ के गीत" से लेकर "जुलूस कहाँ जा रहा है" तक की कविताओं का संक्षिप्त परिचय मैंने संकलित किया है। साथ ही उनके गज़ल-संग्रह (बाजार को निकले हैं लोग) का भी संक्षिप्त परिचय दिया है। उनकी काव्य-कृतियों का सृजनात्मक मूल्यांकन करते वक्त उनकी अन्य रचना-विधाओं में व्यक्त विचारों को भी परखना आवश्यक महसूस हुआ। अतः उन सभी विधाओं-उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनकी अन्य विधाओं में भी सामाजिक पीड़ा और विसंगतियों का ही चित्रण है। प्रेमचंद की उपन्यास-परम्परा का विकसित रूप रामदरश मिश्र में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित है। अतः स्पष्ट है कविता के समान अन्य विधाओं में उनके साहित्य के केंद्र में सामान्य व्यक्ति तथा उसकी समस्याएँ ही रही हैं।

द्वितीय अध्याय में रामदरश मिश्रजी के काव्य में व्यक्त मानवतावादी विचारधारा को स्पष्ट किया है, जो उनकी काव्य-सरिता में अजस्त्र रूप में प्रवाहित है। इस अध्याय में प्रथम "मानवतावाद" इस शब्द का अर्थ स्पष्ट किया है, फिर मानववाद और मानवतावाद के साम्य-वैषम्य का विवेचन करके मानवतावाद की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी हुई मुख्य परिभाषाओं के आधार पर मानवतावाद का स्वरूप स्पष्ट किया है। तदनंतर आधुनिक-हिन्दी-काव्य में मानवतावाद की भूमिका को विश्लेषित करके मिश्रजी के काव्य में व्यक्त मानवतावादी विचारों को विवेचित किया है।

मानवता का कल्याण मिश्र जैसे प्रगतिशील कवि के काव्य का प्रमुख पक्ष रहा है। मनुष्य और उसके समाज की त्रासद विडम्बनाएँ रामदरश मिश्र की रचनाशीलता के लिए करूणा का आधार भाव बुनती हैं। इसी करूणा के असर में कवि की प्रारंभिक कविताएँ गहरी मानवीय उदासी में ढलती हैं और यही करूणा धीरे-धीरे प्रौढ वेदना

का रूप ले लेती है। रामदरश मिश्रजी की यह वेदना समाज की जहरीली गाँठों को खोज रही है, उनसे टकरा रही है। कवि के हृदय में विराजमान मानवतावादी विचारधारा समाज में फैली विषमता को देखकर विद्रोह करने लगती है। अभावग्रस्त सामान्य व्यक्ति के प्रति आस्था रखनेवाला उनका कवि पीड़ित-शोषत जनों का हिमायती बनकर उनपर अन्याय करनेवाले शोषकों के प्रति घृणा से भर उठता है। सामान्य-पीड़ित लोगों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता, जीते-जी मुर्दों के समान उनकी हालत होती है, यह देखकर कवि उन्हें न्याय दिलाने के लिए जूझ रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामान्य लोगों के मन में जगे सुख और शांति के सामने टूटकर चकनाचूर होते हैं, तो कवि इस मोहभंग की स्थिति पर भी व्यंग्य करता है। गांव और शहर के बीच की बढ़ती दूरी और गांव की समस्याओं पर चाय-घरों में बैठकर बहसे करने की हमारे नेताओं की प्रवृत्ति को भी मिश्रजी की कलम ने नहीं छोडा है। धर्म और राजनीति की मिली-जुली साजिश से सामान्य लोगों को कैसे भडकाया जाता है और परिणामस्वरूप वे आर्थिक-संकट के कैसे शिकार हो जाते हैं। इसका नग्न चित्र खींचने के साथ ही, अभावों की आग से सजग होकर नेताओं को खुली चेतावनी देनेवाले गांव के लोगों को भी कवि की पैनी दृष्टि अनदेखा न कर सकी है।

मिश्रजी ने देखा है कि बौद्धिकता के कारण व्यक्ति की संवदेनशीलता कम होती जा रही है। देश की नंगी-भूखी जनता सरकार की तरफ आशा-भरी नजरों से देख रही है। लेकिन उसके लिए बनाई गई योजनाएँ उसके नाम पर कोई दूसरा ही हड़पता है। और गरीब जनता पेट की आग से तडपती ही रहती है। इसे मिश्रजी ने बड़ी मार्मिकता के साथ अंकित किया है। आज हमारा सामाजिक ढाँचा चरमराकर टूट रहा है। कानून और व्यवस्था कमजोर पड़ रही है, जिससे असुरक्षितता बढ़ रही है, तो दूसरी ओर हमारे नेता दोहरा रूप अपना कर आग लगाने और बुझाने का काम कर रहे हैं। ये दोगले व्यक्तित्ववाले नेता जन-सामान्य को तो धोका दे सके हैं, लेकिन मिश्रजी की कलम को धोका देना उनके लिए कतई संभव न था। उनके इस रूप को मिश्रजी की कलम ने ठीक से पकड़ा है।

युगों से पीड़ित और उपेक्षित भारतीय नारी को भी मिश्रजी ने मानवता की निगाहों से देखा है और उसे त्याग और करूणा की मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठापित

किया है।

मानवता के प्रतिमूर्ति गांधीजी की मृत्यु पर भी मिश्रजी ने अपनी व्यथा व्यक्त की है। मानवतावाद की विस्तृत दृष्टि रखकर उन्होंने पाकिस्तान की हिंसा नीति का भी विरोध किया है।

मिश्रजी ने अपनी समस्त कविताओं में मानवतावादी विचारों को किस प्रकार प्रकट किया है, इस अध्याय में चित्रित है। उपर्युक्त विवेचन उसका सारमात्र है।

तृतीय अध्याय में मिश्रजी के काव्य में चित्रित व्यंग्यात्मक विचारो पर विचार किया है। प्रथम "व्यंग्य" शब्द का अर्थ स्पष्ट करके, हास्य और व्यंग्य के बीच के अंतर की समीक्षा की है। तद्नंतर "व्यंग्य" की विभिन्न विदानों द्वारा दी हुई परिभाषाओं के आधार पर व्यंग्य का स्वरूप स्पष्ट किया है। आगे आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की भूमिका का विश्लेषण करके मिश्रजी के व्यंग्य सम्बन्धी मत को उध्दृत किया है। इसके बाद मिश्रजी के काव्य में अभिव्यक्त उनके व्यंग्य-विचारों का विवेचन किया है।

मिश्रजी प्रगतिशील विचारधारा के कवि हैं और व्यंग्य प्रगतिशील कवियों की एक प्रमुख विशेषता है। उनके काव्य में चित्रित व्यंग्यात्मकता को देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी जीवन-दृष्टि सर्वथा उदात्त रही है। सामाजिक और आर्थिक विसंगति मिश्रजी के व्यंग्य को जन्म देने में सबसे महत्त्वपूर्ण रही है। उनकी व्यंग्य रचनाओं की मुख्य प्रवृत्ति सुधारवादी रही है। फूहड़ व्यंग्य करके हास्य रस का निर्माण करना उन्हें अभिष्ट नहीं है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, कुपरम्पराओं, रूढ़ियों और अंधविश्वासों आदि बुराइयों पर अपनी कविताओं में व्यंग्य करते हुए अनाचारों की खिल्ली उड़ाने का सफल प्रयास किया है। धर्म का व्यावसायिक और स्वार्थसिद्धि के लिए उपयोग करनेवाले तथाकथित धर्म के ठेकेदारों, अन्तर्राष्ट्रीय चिंतक होने का नाटक करनेवाले कोरे बुद्धिवादियों तथा एक ओर आधुनिकता का जीवन

जीने वाले, सभी वैज्ञानिक उपलब्धियों का लाभ उठानेवाले और दूसरी ओर पत्रा देखकर जनवादी घोषणा करनेवाले अंधश्रद्धा के कीचड़ में सने हुए अवसरवादी राजनेताओं को भी मिश्रजी के व्यंग्य-बाणों का शिकार होना पड़ा है। एक ओर अपने भाषणों में बार-बार गांधी का नाम लेनेवाले, उनके दर्शन को आदर्श बताने वाले और दूसरी ओर अपने व्यावहारिक जीवन में गांधी के सिद्धांतों की हत्या करने वाले दोहरे व्यक्तित्वाले स्वार्थी राजनेताओं को देखकर मिश्रजी घृणा से भर उठते हैं और व्यंग्य के अस्त्रों से उन्हें घायल करते रहते हैं।

व्यंग्यकार का व्यक्तित्व अपनी रचनाओं में प्रकट होता है। उसे सशक्त और साहसी होना होता है जो साहसी और सशक्त होता है, उसमें ही विसंगतियों पर आक्रमण करने की क्षमता रहती है। मिश्रजी की व्यंग्य-रचनाओं को देखने के बाद पता चलता है कि वे भी उक्त धारणा पर खरे उतरते हैं। आपकी "साक्षात्कार" कविता में हमारी विसंगत-व्यवस्था पर किया गया कुटाराघात - "हिजड़ो के हाथो में/ कामशास्त्र की पोथियाँ हैं / भेंडियों के गले में टंगा है / वैष्णव संगीत / बंदूकों पर पंचशील की मुहर है।" उनके साहस का ही प्रतीक है। मिश्रजी ने समाज-सुधार एवं क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए व्यंग्य एक सफल माध्यम बनाया है और वे सदैव सजग रहकर व्यंग्य-रचना करते रहे हैं। उन्हें पूर्ण पता है कि कौन-कौन-सी परिस्थितियाँ तथा परिवेश व्यंग्यास्पद हैं तथा किन-किन पर व्यंग्य करना है। स्वभाव से मृदु होने के कारण मिश्र शिष्ट, सभ्य तथा संवेदनशील व्यंग्य के प्रयोग की ओर उन्मुख रहे हैं। किंतु कहीं-कहीं विसंगतियों से तंग आकर क्रोध की सीमा तक पहुँचानेवाली तीखी आलोचनात्मक शैली भी अपनाई गई है।

चतुर्थ अध्याय में मिश्रजी की कविताओं में चित्रित प्रगतिशील विचारधारा को स्पष्ट किया है, जो उनके काव्य में आद्यन्त बहती रही है और काव्य का आधार भी है। प्रथम प्रगतिशील विचारधारा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए, "प्रगतिवाद" और "प्रगतिशील" शब्दों के साम्य-वैषम्य का विश्लेषण किया है। फिर प्रगतिशील काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का संक्षिप्त विश्लेषण किया है तदनंतर कवि मिश्रजी की

कविताओं में अभिव्यक्त प्रगतिशील विचारों की समीक्षा की है।

मिश्रजी साहित्य के क्षेत्र में एक प्रगतिशील कवि के रूप में स्थापित हुए हैं। संघर्षरत वर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति रही है। पूँजीपतियों के द्वारा हमेशा जिनका शोषण होता रहा है वह निम्न वर्ग उनकी आस्था का केंद्र रहा है। वे मार्क्स की तरह समाज में केवल दो ही वर्ग स्वीकार करते हैं - शोषक और शोषित। इसके पीछे कारण बताया है - अर्थ का असमान वितरण। अतः वर्गहीन समाज की स्थापना उनकी प्रगतिशील विचारधारा का लक्ष्य रहा है और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए क्रांति को आवश्यक माना है और यह क्रांति कवि को सर्वहारा वर्ग के द्वारा अभिप्रेत है। वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए निम्न वर्ग को संगठित होकर संघर्ष करने की सलाह वे देते हैं।

मिश्रजी के काव्य में शोषितों के प्रति गहरी आत्मीयता और सहानुभूति प्रकट हुई है। हमारे देश की भूखी-नंगी जनता का हमारी सरकार की तरफ देखने का आशावादी दृष्टिकोण और सरकारी यंत्रणा की निर्ममता को तीखे व्यंग्यात्मक शब्दों में प्रकट किया है। नगर-जीवन का आधार-मजदूर, आज पेट की आग से कैसा त्रस्त है, मिलोंसे निकलनेवाले गंदे पानी का उसे कैसे सहाना लेना पड़ता है और यह सबकुछ देखकर भी आँखे मूँदनेवाली हमारी सरकार के झूठे और गरम वायदों की हवाओं के बीच इन्हें कैसे झुलसना पड़ता है, आदि सब मिश्रजी की सधी हुई कलम से छूट न पाया है।

प्रगतिशील अंतर्दृष्टि का कवि सभी प्रकार के शोषण का विरोध करता है। प्रगतिशील विचारधारा के कवियों ने युग-युग से पुरूष-दासता की लौहमयी श्रृंखलाओं में बद्ध नारी की मुक्ति की घोषणा की है। मिश्र भी नारी की दयनीयता से चिंतित हैं। उन्होंने नारी को आगे लाने की घोषणा की है। दिन-रात घर के कामकाज में जुटनेवाली और पुरूष को यश-शिखर पर पहुँचानेवाली नारी को कष्टों से मुक्त करने के लिए मिश्र का कवि छटपटा रहा है। मिश्रजी के उपर्युक्त विचारों को इस अध्याय में विस्तार से विवेचित किया है।

पंचम अध्याय में मिश्रजी की काव्य-भाषा की विशेषताओं को स्पष्ट किया है। प्रथम काव्य में भाषा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए काव्य में उसके महत्त्व को भी स्पष्ट किया है। फिर मिश्र की काव्य-भाषा के स्वरूप का विवेचन करते हुए उसकी विशेषताओं का विश्लेषण किया है।

मिश्रजी ने अपने काव्य के लिए सहज एवं बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने बोलचाल में प्रयुक्त देशी-विदेशी तथा आँचलिक शब्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। उनकी भाषा भावानुकूल, यथार्थपरक, व्यंजक, प्रभावपूर्ण तथा व्यावहारिक है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि मिश्रजी अपने काव्य के द्वारा निरन्तर जनहित के प्रति समर्पित होते गये हैं। वे एक प्रगतिशील कवि के रूप में स्थापित कवि हैं। उनकी संवेदना जिन लोगों के साथ है, वे इस देश के अभावग्रस्त, भूखे-नंगे लोग हैं। देहात में बसे अभावग्रस्त, शोषित, पीड़ित और धोखा खाये हुए लोग कवि की आस्था के केंद्र में हमेशा रहे हैं और उन्हीं के हित में मिश्र के काव्य का सृजन होता रहा है।